बच्चियाँ तो नहीं जानती हैं इतनी; क्योंकि अखबारें नहीं पढ़ती हैं और ये पढ़ते हैं, सुनते हैं बहुत कुछ बाहर में। ये बाहर रहते हैं, ये अंदर रहने वालीं, फर्क रहता है समाचार सुनने में। आजकल जो कांग्रेसी हैं वो बहुत करके बाहर बहुत घूमती हैं, सोसाइटी की सेवा के लिए भी। तो निमंत्रण भी मिलते रहते हैं। ये कभी रिलीजियस की कॉन्फ्रेन्स होती है और एक कॉन्फ्रेन्स होती है– वेजीटेरियन कॉन्फ्रेन्स, वो भी कॉन्फ्रेन्स। मैंने उनका आज पढ़ा नहीं, वो जो सारा लिखत है उनकी, जो निमंत्रण भेज देते हैं कि आके शामिल हो जाओ। तो वेजीटेरियन के जो जो इनकी कॉन्फ्रेन्स होती है, तो ज़रूर वे फिर वेजीटेरियन के लिए ही कहेंगे कि वेजीटेरियन बनना अच्छा है। ये सब गुण दिखलाएँगे, ये करेंगे, वो करेंगे और निमंत्रण भी है उनका कुछ। तो बाप ने ये रमेश को लिखा था, उन्होंने ही भेजा था। तो वेजीटेरियन को कहा जाता है– वैष्णव। वैष्णव बहुत होते हैं यहाँ भारत में भी। ये जो वल्लभाचार्य कुल के होते हैं, उनको भी वैष्णव कहा जाता है। जो माँस–मदिरा वगैरह, ये अंडे–मच्छी वगैरह नहीं खाते हैं, उनको भी वेजीटेरियन कहा जाता है 'वैष्णव'; परन्तु तुम बच्चे ये वैष्णव बनने का है, विष्णु की वंशावली। अब विष्णु की वंशावली तो वैष्णव हैं और प्रकार के; क्योंकि वो विषय–सागर में गोते नहीं खाते हैं। उनको कहा जाता है– वैष्णव, सच्चे–2 वैष्णव; क्योंकि विष्णु की वंशावली है ना बच्चे! तो विष्णु की वंशावली ये। ये तो वैष्णव हैं; क्योंकि अहिंसक हैं, एक/दो में ऊपर को काम–कटारी नहीं चलाते हैं। अच्छा, इसका नाम रखा भी हुआ है–मूत–पलीती। यानी मूत–पलीती, वैष्णव कभी मूत तो सेवन में नहीं ले आएँगे। उनको कहा ही जाता है–विष्णुवंशी। अभी वैष्णव किसको कहा जाता है, फिर इनको समझाना पड़े कि ये जो विष्णु पुरी है, उनमें जो ये विष्णुवंशी हैं फिर लक्ष्मी और नारायण और उनके संतान अर्थात् देवी–देवता, वो हैं पक्के वैष्णव, और दूसरा कोई हो ही नहीं सकते हैं। सिवाय देवी और देवताओं के वैष्णव कोई भी नहीं गिने जाते हैं; क्योंकि वो तो वेजीटेरियन की बात इसमें नहीं है। वेजीटेरियन में प्याज़ वगैरह भी खा जाते हैं, सिर्फ मांस–मदिरा, माँस, मदिरा भी होगी शायद। ये मच्छी वगैरह ये सभी नहीं खाते होंगे, उनको वेजीटेरियन कहा जाता है या वैष्णव कहा जाता है। तो कॉन्फ्रेन्स होती है तो उनको ये समझाना है जा करके कि वैष्णव हैं जो पैराडाइज़ में रहते हैं और वो हैं आदि सनातन देवी–देवता वाले, जो सतयुग में ही थे। तो उनको ये समझाया जाएगा कि जो विषय–सागर में गोता नहीं खाते हैं अर्थात् विशश(विषियस) नहीं बनते, वाइसलेस हैं, उनको वैष्णव कहा जाता है; क्योंकि वो हैं वाइसलेस विष्णुपुरी के, लक्ष्मी और नारायण के। वो जो डिनायस्टी है, वो डिनायस्टी ही सच्ची वैष्णव है और वेजीटेरियन तो बिल्कुल कॉमन बात है। वो तो अनकॉमन है और वो वैष्णव बनाने वाला बाप शिवबाबा, उन बिगर ऐसा वैष्णव कोई बना ही नहीं सकते हैं। तो ये अगर जा करके समझावें कि पैराडाइज़ में कौन राज्य करते थे, ये पक्के वैष्णव हैं, ये जो आदि सनातन देवी–देवता धर्म वाले; क्योंकि वो निर्विकारी वाइसलेस वर्ल्ड है। तो जो वाइसलेस वर्ल्ड है वो कोई भी ये प्याज़ वगैरह ये तो खाते ही नहीं, न उनको कोई भोग लगाया जाता ऐसा। उनकी महिमा भी ऐसे ही कही जाती– निर्विकारी, संपूर्ण निर्विकारी। तो देवी–देवताओं को कोई भी ऐसी वस्तु भोग में लगाई ही नहीं जाती है। निर्विकारी भी कहा जाता है और उनको कोई भी ऐसी वस्तु भोग लगाई नहीं जाती है, प्याज़ वगैरह या कुछ भी। तो वो सिर्फ तुम बच्चे ही सिद्ध करके बताते हो उनको कि वेजीटेरियन का अर्थ क्या है? वेजीटेरियन कौन होते हैं? यहाँ तो तुम्हारी जो भी ये वेजीटेरियन कॉन्फ्रेन्स वगैरह हैं या उनमें जो बहुत ही लिस्टें देते हो, वो कोई नहीं गिना जाते हैं। है ना! तो उनको मालूम पड़े कि वैष्णव या वेजीटेरियन किनको कहा जाता है? (उन)का तो बहुत मान है, वो तो विश्व के मालिक

थे वा पैराडाइज़ के मालिक थे या बहिश्त के या स्वर्ग के। ये सब–कुछ समझाना है अच्छी तरह से। तो समझे ना, ये भारत में ही थे, और कोई भी खण्ड में ऐसे वैष्णव नहीं बनते हैं, होते ही नहीं हैं बिल्कुल। तो ये भारत की महिमा करते हैं ना बच्चे! फिर साथ–2 में भारत की महिमा करते ऐसे कि वैष्णव बनाने वाला शिवबाबा ही है। उनका ही जन्म भारत में होते हैं; क्योंकि वहाँ ही ये शिवजयन्ती मनाते हैं। वो ही आ करके ये आदि सनातन देवी–देवता धर्म की या वैष्णव धर्म की स्थापना करते हैं। मनुष्य नहीं करते हैं, नहीं, इनकॉर्पोरियल निराकारी गॉडफादर करते हैं। ऐसे वैष्णव सिद्ध करके बताना है। फिर उनमें ये भी बताना है कि जब बाप आते हैं तो भारत में आते हैं और वो है ही लिबरेटर और गाइड और जन्म भी होता है इनका भारत में और सबकी सद्गति भी करते हैं, सबकी, जो भी मनुष्यमात्र होते हैं यहाँ, सिवाय उनके किसकी भी सद्गति हो ही नहीं सकती है। जो भी धर्म के स्थापक वगैरह होते हैं; क्योंकि ब्राह्मण धर्म भी तो है, वो भी तो सिद्ध करके इनको बताना है कि ब्राह्मण धर्म है, वो भी तो शिवबाबा स्थापन करते हैं। फिर उन ब्राह्मणों को देवता बनाते हैं और जो ये नॉलेज पूरी नहीं ले सकते हैं वो फिर क्षत्रिय बन जाते हैं, दो कला कम वाले बन जाते हैं। तो उनमें सारा ये जा करके समझावें, ये सभी चित्र भी ले करके उनको और उनमें ये योग की भी बातें उठाय देवें– ये योगबल से ये इतने ऐसे वैष्णव प्योर बनते हैं, कि एब्सल्युटली प्योर आत्मा बनती है उन द्वारा। दे आर ऑल बन तो जाते हैं सब; परन्तु पोजीशन उन सबका ये आदि सनातन देवी–देवता वाली आत्माओं से कम है। वो हीरो एण्ड हीरोइन का पार्ट लेते हैं; क्योंकि विश्व का राज्य भी लेते हैं, फिर पूरा गँवाते भी हैं। देखो, अभी गँवाए हुए हैं। अभी फिर वो ले रहे हैं। बाप जो हैविन स्थापन करते हैं हैविनली फादर या पैराडाइज़, वो आ करके ये योग सिखलाते हैं। इसमें कोई पवित्र/अपवित्र नहीं बनते हैं, स्त्री–पुरुष पवित्र रहते हैं; क्योंकि भारत के ही स्त्री और पुरुष पवित्र थे, पवित्र गृहस्थ आश्रम था। देखो, ये है ना पवित्र, फिर वो 84 जन्म में कैसे आ करके अपवित्र बनते हैं– तो ये 84 चक्कर का भी इनको समझाय सकते हैं; क्योंकि टाइम तो लेना ही पड़ता है ना उनसे, कि अगर समझने चाहते हो, तो अच्छी तरह से समझो; क्योंकि हम ही सिर्फ हैं यहाँ जो रचता और रचना के आदि,मध्य,अंत को जानते हैं। पास्ट में जो होते गए हैं ऋषि–मुनि वगैरह कोई भी और ये देवताएँ भी, ये भी कोई त्रिकालदर्शी नहीं थे। ये भी रचता और रचना के आदि,मध्य,अंत को नहीं जानते हैं। ये सिर्फ इस समय बाप आ करके अपना परिचय (...) और ब्रह्मा के तन से; क्योंकि हम ब्रह्माकुमार–कुमारियाँ ही हैं। तो हम कोई इस समय का, जबकि प्रजापिता ब्रह्मा के एडॉप्टेड चिल्ड्रेन हैं, वो ही सुनते हैं ये नॉलेज। कौन–सी नॉलेज? रचता और रचना के आदि,मध्य,अंत की, जो रचता ही आ करके समझाते हैं। वो ऐसी–2 बातें बच्चों को बहुत अच्छी तरह से, जो बाबा का सर्विसेबुल बनने चाहते हैं और ऊँच पद पाना चाहते हैं, उनको बहुत नोट करनी होती हैं ये प्वॉइण्ट्स और सर्विस भी करनी है। सर्विस की रिज़ल्ट भी बाबा को भेज देनी है। जब तलक बाबा के पास कोई का सबूत नहीं आता है सर्विस का, बाप के, बापदादा के दिल पर नहीं चढ़ते हैं। अगर जाते भी हैं रेग्यूलर समझो, तो भी कोई ऐसे नहीं कि चढ़ पड़ते हैं। नहीं, चढ़ते सिर्फ वे हैं अच्छी तरह से; क्योंकि दिल पर जो चढ़ेंगे वो तख्त पर भी बैठेंगे, फॉलो करेंगे। तो जो सर्विस का सबूत बताते रहेंगे वो दिल पर चढ़ते रहेंगे। बाकी सर्विस का सबूत ही नहीं होंगे तो वो दिल पर कैसे चढ़ेंगे! सो भी अच्छी सर्विस। सर्विस तो बहुत ईज़ी है बच्चे, ये कुछ बहुत वो कोई तकलीफ की नहीं है; परन्तु वो माया भी तो प्रबल है, वो सर्विस करने देती नहीं। समझे ना! तुम सर्विस करते हो, याद की यात्रा, योगबल, ये तो तुम सारे विश्व को पावन बनाते हो। तो माया विघ्न डालेगी ना; क्योंकि वो तो पतित बनाने वाली है ना! तो उसकी लड़ाई होती है ना, जो वो विघ्न डालती है। है

ना बरोबर! तो मेहनत की बात होती है। ये बहुत बड़ी मेहनत है एकदम। याद की यात्रा में बड़ी मेहनत, बड़ी मेहनत, बड़ी मेहनत चाहिए, अगर चाहते हैं कि हम बापदादा के दिल पर चढ़ें तो। सदैव विचार–सागर–मंथन ये सब बच्चों के लिए है, सिर्फ एक के लिए नहीं है। बाबा को तो, शिवबाबा कहते हैं– मुझे तो विचार–सागर–मंथन नहीं करना है ना; क्योंकि पढ़ाई पर तुम हो, हम तो पढ़ाने वाले हैं तुम बच्चों को। हमारे पास तो, हमारी आत्मा में ये ड्रामा के प्लैन अनुसार जो हमको पढ़ाना है तुमको सो हम पढ़ाय रहा हूँ। बाकी पढ़ने वाले तुम हो, पुरुषार्थ तुम बच्चों को करना है। ये तो अविनाशी टीचर है ना बच्चे! अविनाशी बाप भी है, टीचर भी है; क्योंकि न इनका बाप है, न इनका टीचर है, न इनका कोई गुरू है। और तो सबका बाप भी है, टीचर भी है, गुरू भी है, तो शरीर भी है। तो इनको कोई विचार–सागर–मंथन नहीं करना, विचार–सागर–मंथन करना बच्चों को– कैसे सर्विस को बढ़ावे, क्या करें, क्या बाबा को मदद करें। तो विनाश तो होना ही है, पैसे–वैसे तो कोई काम में आने वाले ही नहीं हैं; क्योंकि जानते हो कि वो जो गाया जाता है– फॉलो फादर। तो फॉलो फादर कभी, कभी की ये बात है? ये अभी की...बात है। ये फादर ने क्या किया? कुटुम्ब भी था ना, परिवार वाले थे। वो झट बाप को कहा– चलो, परिवार जानें, वो अपनी तकदीर जगाएँगे जो किसको खाना–पीना होगा तो। बच्चों–वच्चों की कोई परवाह नहीं रखी जाती है। बच्चियों की संभाल की जाती है; इसलिए कहा जाता है– बच्ची कोई अगर न रह सकती है तो उनको शादी कराय देंगे; नहीं तो कोई खराब हो जाएँगी। बाकी बाप को बच्चे की शादी नहीं करानी है वास्तव में। उनको फिर क्या कहना होता है– जाओ, पैसा कमाओ और फिर जाके शादी करो, घर भी अपना बनाओ। मेरे साथ पतित नहीं रह सकते हैं। मैं नहीं जानूँ! अभी ये तो बहुत ही, बहुत ही मेहनत है, ये लोक–लाज, कुल की मर्यादा को एकदम..., तभी तो गाली खाई ना इतनी, कितनी गाली खाई! ये तो लोक–लाज, कुल की मर्यादा, ये खोनी पड़ती है ना! तो वो ताकत इतनी तो बहुत मुश्किल है किसमें। सिर्फ उसको कहा जाता है भई बच्चे को। नहीं, ये सभी फिर क्या कहेंगे, बिरादरी वाले क्या कहेंगे, ये क्या कहेंगे, चाचे क्या कहेंगे, भाई क्या कहेंगे, फलाना क्या करेंगे। यहाँ तो बच्चों को समझाया था ना– जिन जिन भाइयों को लखपति बनाया। समझा ना! बड़ों को, भाइयों को लखपति बनाया छोटे भाई और जब देखा ये बात, वो भी दुश्मन बन गए एकदम। समझा ना! वो भी पंचायत के तरफ हो गया। अरे भाईवार, जिसको कारखाना दिया पिछाड़ी में और घर बैठे उनको सब–कुछ बाबा देते थे बिल्कुल, हाफ पार्टनरशिप भी घर बैठे देते थे। बोले– जाओ, घर में जाके बैठो; क्योंकि इतना खिर नहीं था खरीददारी का। तो वो भी ऐसा उनको पैसे घर बैठे–2, वो भी दुश्मन बन गया, समझा ना! तो दुश्मनी से थोड़े ही कोई डरना होता है यहाँ। जिनको बाप का हाथ मिला, बाबा जिनके तरफ, जो मालिक बनाते हैं, उनके लिए फिर क्या, कोई परवाह थोड़े ही रखी जाती है! तो ये हिम्मत चाहिए बस! (तुमको) मास्टर भी ऐसे पूछेगा ना बच्ची– नशा है बैरिस्टर बनने का, ऊँचा–2 पद पाने का एकदम, नशा है सर्जन बनने का? हो, सभी को नशा तो होगा ना, आई.सी.एस. वालों का भी नशा। तो ये फिर है नारायणी नशा, नर से नारायण बनने के(का) नशा। तो ये तो बच्चों को ज़रूर होना चाहिए ना; क्योंकि आते हो, पढ़ते ही हो नर से नारायण बनने के लिए। नारायणी नशा, तो ये बाबा पूछते सबसे– नारायणी नशा। नारायणी नशा या लक्ष्मी का नशा, बात तो एक ही है। लक्ष्मी वा नारायण का नशा। (म्युज़िक बजा)

रूहानी स्वीट चिल्ड्रेन प्रति रूहानी बाप व दादा का यादप्यार और गुडनाइट।